समावेशीकरणको दिशामा एउटा फड्को :
गोरखापत्रद्वारा प्रकाशित बज्जिका भाषा पृष्ठ

बि.सं. २०६६ साल भदौ १ गते सोमबार

नयाँ नेपाल

गोरखापत्र ११

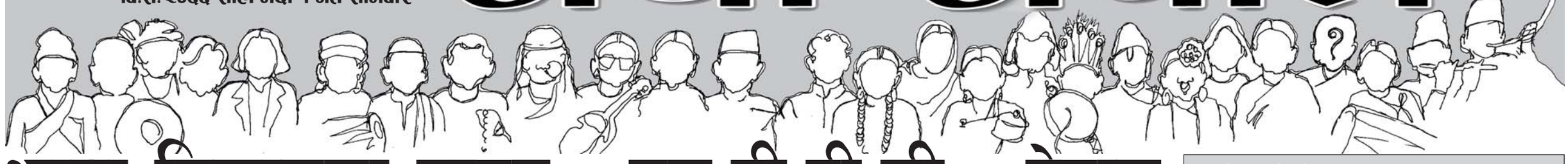

भाषा विकासला तत्पर : एल.पी.पी.सी.- नेपाल

श्रावण, २६ २०६६, 'भाषा संरक्षण तथा प्रवर्द्धन केन्द्र नेपाल' (एल.पी.पी.सी.नेपाल) आ हाइडल वर्ग विश्वविद्यालय के साउथ एशिय ईन्सटीच्युटके आयोजना में जी.टी.जेड. काठमाण्डौं के हल में नेपाल के भाषा स के वर्तमान स्थिति आ ओकर संविधान में सही रुप से राखेके उपर एगो विशाल बाता-कहनी भेल। ई गोष्टी दिन भर के रहे जवन सवेरे के ९:३० मे शुरु होके संझीया ६ बजेले होलक। ऐमे करीव १५० लोग के सहभागीता रहे जावना में भाषा प्रेमी, भाषाविद्यार्थी आ सभासद् लोग रहे।

सांस्कृतिक तथा सामाजिक एक्यबद्धता निर्धारण समिति, संविधान सभा के सभापति सुश्री नवोदिता चौधरी जी के बिशेष उपस्थिति होला से ए गोष्टी के महत्व संविधान बनेके अइसन समय पर विशेष कहल जा सकइला।

सुनिलकुमार मिश्र
अध्यक्ष : एल.पी.पी.सी.- नेपाल

उनका अनुसार नेपाल के सब भाषा आ भाषिका के साथे-साथ समाजिक-सांस्कृतिक विविधता के समायोजन नयाँ नेपाल के संविधान में होएके चाहि। श्री जितेन्द्र सोनल सभासद के बिचार में नएका संविधान अइसन होएके चाहि जावना में सबलोग के आस्था बराबर होखे आ ओकराला देश के सभी भाषा-संस्कृति के एक रुप से स्थान देवेके परी। एहीलेखा तीसर सहभागी सभासद् श्री गोपाल ठाकुर नेपाल में संघीय लोकतन्त्र के निर्माण भाषिक-सास्कृतिक विविधता के गोट करइत होएके चाहि पर विशेष जोर देलन न त ई संविधान में लोग के विश्वास न होई।

ई गोष्ठी में एगो विशेष कार्यपत्र प्रस्तुत भेल। यु.एन.डी.पी. के सल्लाहकार सुश्री कैटेलिना मिहोरेक बोलीभीया में संविधान निर्माण कइसे भेल रहे ओपर एगो लामा कार्यपत्र प्रस्तुत कएलिन जवन नेपाल के अभी के समय ला बडा महत्व रखइता। उनका कार्यपत्र के अनुसार बोलीभीया में राज्य के दुगो भाषा प्रयोग करही के परले, एगो जवन सब लोग बुझइत होखे आ दोसर जवन खास क्षेत्र के लोग बुझइत होखे। नेपालमे शायद ओइसने स्थिति हइ। एडलेखा एगो कार्यपत्र 'भाषा आ भाषिका' के बिच मे अन्तर पर भेल जवन नेपाल के अभी के स्थितिला बाडा महत्व रखइत हवे काहेके भाषा आ भाषिका के बोलेवाला के बिच में विवाद चल रहल हवे। अभी दुनु पक्ष अपन-अपन भाषा-भाषिका के संविधान में स्थानला गरम आवाज से आ रहल हवे। ये कार्यपत्र के पेशवाला श्री भीमलाल गौतम जी रहन जवन त्रिभुवन विश्वविद्यालय में भाषाशास्त्र के उप-प्राध्यापक हथुन। इ दुनु कार्यपत्र के आलावा नेपाल के इतिहास में एगो नाया अध्याय जोडलक।

उपस्थित भाषिक-भाषिका समुदाय, वक्ता आ सहभागी लोग के सूझाव भी बहुते रुप मे आएल जवना के छोटकरी में अइसे रखल जा सकहता :

१) सब भाषा-भाषिका के एकलेखा अधिकार होईके चाहि,

२) सब तरहके भाषिक विभेद दुर होइके चाहि,

३) भाषिक-सामुदायीक विविधता के समझे वाला संविधान बनेके चाहि,

४) सब भाषा-संस्कृति के एकेलेखा विकास आ संरक्षण होएके चाहि,

५) उ सब निति में बदलाव होएके चाहि जवन भाषिक-सांस्कृतिक विविधता के न समझे चहि ओकर विरोध करे चाहे ओकरा के बाधा के रुप में लेवे। ■

कार्यक्रम के सम्बोधन करइत संस्थाके अध्यक्ष सुनिलकुमार मिश्र

यु.एन.डि.पि.के सल्लाहकार सुश्री कैटेलिना मिहोटेक

हाइडल बर्ग विश्वविद्यालय जर्मनीके नेपाल प्रतिनिधि प्रतिभा खनाल

कार्यक्रममे सहभागी लोग

कार्यक्रममे अपन विचार रखइत तमलोपाके सभासद जितेन्द्र सोनल

सामाजिक कुरितीमे फँसल मधेश

वास्तवमे देखल जाईत दहेज एगो सामाजिक, पारिवारिक कलंक हवे। एकरा उपर बहुते किताब लिखल गेल बा, देशमे बहुते कानुन सेहो बन गेल बा। तइयो ए बुराई में न कवनो सुधार भेल बा। कवनो एइशन दिन नईखे जवना दिन अखवार आ टेलिभिजन आ रेडियो आ एफ.एम.ई न वतवईतबा कि दहेजके कारण बेटी बहिन, पतोहके जरावल जाइ छई, मुवावल जाईछई। रेडियो,टेलिभिजन आ आखवार में छाप देलासे, बतादेलासे खाली दहेजके परम्परागत रोगमे कवनो किसिमके कमी न आ सकइछई जब तक ऐकराके सामाजिक स्तरपर रोकेके काम न होई, जनचेतना जगावेके काम न होई, तबतक लोगके बुढ आ पुरान मानसिकता न बदली। लोग परम्परागत ई बिकारी से परेशाने रही।

एह परम्परागत सामाजिक बुराईके नतिजा कथि होखले जानल बहुत जरुरी छई। देखल जाए त सब लोग एकरासे परिचित बा लेकिन लोग आँख बन कके अपन बेटा-बेटीके शादी वियाहमे दहेज (तिलक) लेन-देन करले। लोग बुझके भि बुझ पचावले। दहेजके विषयमे हमनी के सामाजमे एह बात साफ छई कि एह बिमारीके प्रचार-प्रसार आ लोग प्रभावित मध्यम बर्गके आनि सोझ भाषामे बहुत बिच बिचवा लोग ऐसे जादा परसान बा। उच्च वर्गके आ निम्न वर्गके लोगके खासे फरक नईखे परल काहे कि उच्च वर्गके पास बहुत के बहुत पईसा कौड़ी बा आ निम्न वर्गके कवनो फरक नईखे परईत काहे कि ओकरा अपन समाजके कवनो परवाह नईखे। लेकिन जे लोग मध्यम बर्गके बा - लोगवा कथी कहीं ? ईहे लाछना आ डरसे लोग दिनके दिन बरबाद हो रहल बा।

हमनी के समाजमे बापमतारीके घरमे जहियासे बेटीके जनम होखले बापमतारी ओकराके अपन शिरके बोझी समझे लागले। एगो हिन भावना, हेयके दृष्टिसे देखे लागले, बेटी चाहे केतनो तेज बुद्धिके चाहे केतनो सुन्दर शुशील काहेन होखे। बेटीके पढेलिखेके, सामाजमे अपन प्रतिभा देखावेके, अपन समाजिक पारिवारिक जिम्मेवारी पुरा करेदेवेके मोका न देवल जाले। बेटी के भितर रहल जवन भी प्रतिभा ओहि लेखा परदाके भितर, सास ससुर, पति परमेश्वरके खटन आ हुजुतन करेमे मरके रह जाले, दबाके रह जाले। देखल जाए त हमनीके सामाजमे बेटीपोतीके त पढावले न जाले, केहु पढावते बा त जादा से जादा गाँवके स्कूलमे एस. एल. सी. तकके पढाई लिखाई बा त एस. एल.सी. तक पढादेवल जाले। एह सचाई बा कि सादी बिआह बराबरी के हैसियतमे होखेके चाही, लेकिन तिलकके डिमान्डके ध्यानमे राखके आनि दहेज (तिलक) के मारमे परके हरदम बेटीके शादी लोग अपनासे कम हैसियतके घरमे होखले। जैसे बापमतारीके दुलारी बेटी दोसराके घरमे जाके कुलारी बन जाले, आ सबदिन बापमतारीके दु सेर मोटरीके आशा पर अपन जिनगी जिएमे मजबुर होजाले। एकेगो कोखसे जनम भेल बेटा अपन श्रीसम्पतिके मालिक बनजाले, लाखो करोडोके जिम्मेदार कहाले आ बेटी गरिब बन जाले, गोबर बिछनी बन जाले। केतवर अन्याय, अत्याचार बा एकेगो पेटके सन्तानके साथे। अगर केहु अपन बराबरीमे बेटिके सादी बियाह करतो बा त ओकर अपन सम्पति बेचके लड़कीबालाके डिमान्ड पुरा करेके परले। लइकाके बापके आ लईकाके डिमान्डके पुरा करइत - करइत बेटीवाला कंगाल बन जाले। अपन बाप मतारीके अर्जल श्रीसम्पतिके भजादेवेमे मजबुर होजाले। खाली विआहेके बेरी न, बियाह भेलाके बाद भी बेटहाके ओरसे मांगेबाला दहेजमे कवनो भी कमी न आवले। ओहीसे कहल जाले की बेटी दमादला सबदिन कुछ न कुछ लेवेके रास्ता बनले रहले। अगर लडकाबालाके माग पुरा नईखे होईत त बेटीके सबदिन खोबसन देवल जाले। खपरदाताबा के बेटी, लंगट उघारके बेटी कहके गारी देवल जाले। गारीए देके रहजाईत त ठिके बा लेकिन घरसे निकाल देवेके, सब दिनला छोडके दोसर शादी कलेवेके, जानसे मारदेवेके, खादहा खुनके घरेमे गाड देवेके, जरादेवेके जईसन घटनासब टि.भि.मे, रेडियोमे, अखवारमे सबदिन सुनेके देखेके पढेके मिलले। एसे हमनीमे सामाजिक संतुलन दिनपर दिन खराब होईत जाईत बा। बेटीके जनम बाप-मतारीला आ सउसे जिनगी, एह समाज, परिवार, परम्परा दहेज, (तिलक) बेटिला अभिषाप बनजाले। एह दहेज देवेलेवेके प्रवृतिसे दुनु परिवारके पारिवारिक, सामाकि सुखशान्ति, अमनचयन, प्रतिष्ठामे कमी आवले। दुनु परिवारमे कलह मनमोटाव बढईत जाले आ जवन शादी विआहके समयमे एगो पवित्र सम्बन्धके सुरुआत होखले उ दिन पर दिन बिगडल जाले। अन्तमे जाके लईकाबालाके डिमान्ड पुरा न होलापर लडकीके छोड देवल जाले, चाहे दुःख तकलिफ देके काट देवल जाले, मार देवल जाले, जरा देवल जाले। चाहे ओकराके नदीमे दहादेवल जाले, चाहे रेल मे कटेके, जहर खाके मारेला मजबुर करदेवल जाले। अन्तमे बेटिके सबदिन ला ओकर जिनगी समाप्त करदेवल जाले।

वास्तवमे कइसन सामाजिक न्याय हई। हमनीके ऐइसन समाजिक न्याय प्रणालीके पालना करेके परल कि एकरा बिरोधमे आवाज उठावेके परल ? ऐकर फैसला हमनीके जल्दी से जल्दी करेके परल। एगो इहा सोचेवाला वात ई छई कि एह कुप्रथा के विरोधमे अगर बेटिवाला लोग आवाज उठाइत बा त सब लोग ओकर मजाक उठासकइ छई। ई कहके कि बेटिके दहेज नदेवे सकल त बारेगो बहाना नाटक कएले बा। लोग ओकराके निच भावनासे देखि, ओकराके एक किसिमसे सामाजिक बहिस्कार करदी लेकिन बेटाबाला लोग एकर ऐ कुप्रथाके बिरोध करी त एकरा बिपक्षमे बोलेवाला लोग नरही। काहे कि बेटीवाला खुशे रही त बिरोध करेके कवनो सवाले न उठी। आ तिलकसे जेकरा फायदा बा बेटाबाला लोग उ दहेजके बिरोधमे आवाजे उठाई। ऐ लेखा बेटावाला लोग दहेजके बिरोध करईत हथुन त बहुत हदतक एह कुप्रथाके रोकेमे आदमी सफल होसकले। धिरे-धिरे ई प्रथा बदल सकले। एगो ताजुबके बात ई छई कि दहेजके बिरोधके बात बेटीके बिआहके समय सबलोग मानले लेकिन उहे लोग बेटाके विआहके समयमे दहेज लेबेमे सबसे अगाडुए रहले। विना दहेजके बेटाके सादी करु कहेबालासे लड बसले। अपन बेटाके वियाहके बेरि नओकरा कुछो लउके न समझले न कुछो बुझाले। गाईभैसी के जईसन अपन बेटाके डाक बोल देवलजाले।

ए लेखके माध्यमसे एगो ई सुझाव देवल जा सकईता कि कानुनके नजरमे बेटा होखो चाहे बेटी बाप-मतमरीके सम्पतिमे दुनुके हक बराबरे होखी। बेटा अपन घरमे रहके ओकराके भोगचलन करी त बेटी अपन ससुरार लेजाके भोगचलन करी। बापमतारीके श्रीसमपतिके कुछ हिसा बेटीके सरसमान, गरगहना किन देवेमे खरच कर देवेके परल जेसे उ सम्पति सबदिनला बेटीके साथ रहे। ए लेखा ससुरारके ओरी से बेटीके कवनो किसिमके दुःख तकलिप न दियाई। बेटीके ससुरारके जिनगी सुखी रही। बेटी सुखी रही त बाप-मतारी सुखी रही, अमन चैन मे रही। दुनु घर सुखी रही, अवाद रही। दुनुघरके मनमोटाव झगरादन नहोई। पवित्र रिस्ता सबदिनला पवित्र बनके रही जेकरा कारणसे कवनो बेटी पतोहके अपने देहमे अपनेसे आग लगावेके, जहर खाएके नदिमे कुदके मरेके, रेलमे कटके मरेके मोसिबत नआई। ■

जातिय विविधतासे भरल हइ मधेश

मधेश मे रहल जात आ संख्या		
यादव	८९५४२३	३.९४%
तेली	३४५५३६	१.३४ %
कोइरी	२५१२७४	१.११ %
कुर्मी	२१२८४२	०.९४ %
धानुक	१८८१५०	०.८३ %
केवट	१३६९५३	०.७ %
बाहुन	१३४४९६	०.५९ %
बनिया	१२६९७१	०.५६ %
मलाह	११५९८६	०.५१ %
कलवार	११५६०६	०.५१ %
हजाम	९८१६९	०.४३ %
कानु	९५८२६	०.४२ %
सुडी	९८८४६	०.४० %
लोहार	८२६३७	०.२९ %
धुनियार	६६८७३	०.२९ %
कुम्हार	५४१३	०.०४ %
हलुवाही	५०५८३	०.२२ %
राजपुत	४८४५४	०.०१ %
कायस्थ	४६०७१	०.२२ %
बडही	४५९७५	०.२० %
माडवारी	४३९७१	०.१९ %
बरै	३५४३४	०.१६ %
कहार	३४५३१	०.१५ %
लोधा	२४७३८	०.११ %
राजभार	२४२६३	०.११ %
विन	१८७२०	०.८ %
भेडिहर	१७७२	०.८ %
माली	११३९०	०.५ %
कमर	८७६१	०.४ %
धुनिया	१२३१	०.८ %
मधेशी दलित आ संख्या		
चमार	२६९६६१	१.१९ %
मुसहर	१७२४३४	०.७६ %
दुसाध	१५८५२५	०.७० %
सोनार	१४५०८८	०.६४ %
तँतमा	७५५१२	०.३४ %
खत्वे	७६५१२	०.३२ %
धोबी	७३४१३	०.३२ %
बाँतर	३५८३९	०.१६ %
चिडीमार	१२२९६	०.०५ %
डोम	८९३१	०.०४ %
हलखोर	६३२१	०.०२ %
मधेश के जनजाति आ संख्या		
थारु	१५३३८७९	६.७५%
मुसलमान	९७१०५६	४.२७ %
राजवंशी	९५८१२	०.४२ %
संथाल	४२६९८	०.१९ %
झांगर	४१७६४	०.१९ %
गनगाई	३१३१८	०.१४ %
धिमाल	१९५३७	०.०९ %
ताजपुरीया	१३२५०	०.०६ %
बंगाली	९८६०	०.०४ %
पंजाबी	३०५४	०.०१ %
मेचे	३७६३	०.०२ %
किसान	२८५	०.०१ %
कोचे	१४२९	०.०१ %
कशुबाडिया	५५२	०.०१ %
मुण्डा	६६०	०.०१ %

संयोजक : सुनील कुमार मिश्र/कलापतिदेवी यादव
पत्राचार ठेगाना : नयाँ नेपाल,
गोरखापत्र दैनिक पो.ब.नं.२११०० काठमाडौं
E-mail:
gopabahubhasa@mail.com.np